© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

# अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वर्णविन्यासवक्रता

**श्वेता अवस्थी**
(शोधच्छात्रा)
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ

**शोधविषयसार**:-वस्तुतः कालिदास काव्यसम्बन्धी अशेष दृष्टियों से कनिष्ठिकाधिष्ठित हैं। वक्रोक्ति प्रयोग की दृष्टि से भी काविदास की सर्वोत्कृष्ट कृति अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वक्रोक्ति का प्रचुर विलास प्राप्य होता है।काव्यशास्त्रियों में भी दण्डी ने स्वाभावोक्ति को तथा भोज ने स्वाभावोक्ति तथा रसोक्ति दोनों को इसके क्षेत्र से पृथक् रखा है।वक्रोक्ति को केवल अलङ्कार के रूप में ग्रहण करने वाले आचार्यों में मतभेद है–

किसी ने इसकी गणना शब्दालङ्कारों में की है तो किसी ने अर्थालङ्कारों में भामह ने वक्रोक्ति का सर्वालङ्कार रूपों में स्वीकार अवश्य किया है। किन्तु वक्रोक्ति की स्थापना उतने सुदृढ रूप मे नही की जितने सुदृढ रूप में कुन्तक ने की है। कुन्तक ने वक्रोक्ति को एक मात्र अलङ्कार कहकर समस्त काव्यसौनेरेय का अन्तर्भाव वक्रोक्ति में ही कर लिया है। आचार्य कुन्तक के अनुसार वक्तोक्ति का अभिप्राय है प्रसिद्ध अभिधान का अतिक्रमण करने वाली सहृदय आह्लादकारिणी वैदग्ध की शोभा से युक्त भणिति। प्रसिद्दि का अर्थ है शास्त्रादि तथा लोक व्यवहार में प्रयुक्त इसप्रकार वक्रोक्ति शास्त्रादि में उपनिबद्ध शब्दार्थसम्बन्ध तथा प्रचलित व्यवहार सरणी का अतिक्रमण करने वाली है।

**मुख्य शब्द-** वक्रोक्ति, कुन्तक, अभिज्ञानशाकुन्तल, ध्वनि, कालिदास।

वस्तुतः कालिदास काव्यसम्बन्धी अशेष दृष्टियों से कनिष्ठिकाधिष्ठित हैं। वक्रोक्ति प्रयोग की दृष्टि से भी काविदास की सर्वोत्कृष्ट कृति अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वक्रोक्ति का प्रचुर विलास प्राप्य होता है। कविकुलगुरूमहाकविकालिदास के सम्बन्ध में प्रसिद्धि है–

**पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे,**

**कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।**

**अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावा-**

**दनामिका सार्थवती बभूव।।**[1]

वक्रोक्ति का सांकेतिक अर्थ है– वक्र रूप में अर्थात घुमा फिराकर विषय का कथन कवियों ने इसी के आधार पर वक्रोक्ति का प्रयोग वाक्छल, परिहासकथन, क्रीडालाप, विदग्धवचन आदि अर्थों में किया है। किन्तु काव्यशास्त्रियों ने पृथक् पृथक् आशयें में इस शब्द का प्रयोग किया है। किसी ने इसे अतिशयोक्ति का पर्याय कहकर सर्वालङ्काररूपा स्वीकार किया है तो किसी ने इसे अलङ्कार मानने में भी आपत्ति की है।सर्वालङ्काररूपा स्वीकार करने वाले –

**उभवेतावलङ्कार्यौ तयोः पुनरलङ्कृतिः।**

**वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभङ्गीभणितिरुच्यते॥**[2]

राजशेखर ने वक्रेक्ति का निरूपण नही किया किन्तु काकु जिसे अलङ्कारिको ने वक्रोक्ति का एक भेद माना है और उसे ही अलङ्कार कहा है, न कि अलङ्कार।

**काकु वक्रोक्ति नाम शब्दालङ्कारोऽयम् इति रूद्रटः**[3]

**अभिप्रायवान् पाठधर्मः काकुः स कथम् अलङ्कारः स्यात् इति यायावरीयः**[4]

परिहासपेशलेन वक्रोक्ति निपुणनेन राव्यायीकारव्यानपरिचयचतुरेण सर्वलिपिज्ञेन एषापि बुद्ध यत् एवैतावती वक्रोक्तौ इयमपि जानत्येव परिहास जल्पितानि ।

काणे के अनुसार यहाँ वक्रोक्ति का प्रयोग क्रीडालाप परिहास, जल्पित के अर्थ में है।

**सैषा सवेव वक्रोक्तिरन्यार्थो विभाव्यते।**

**यत्तन्येवास्याम् कविना कार्या कोऽलङ्कारोऽन्या विना ॥**[5]

काव्यशास्त्रियों में भी दण्डी ने स्वाभावोक्ति को तथा भोज ने स्वाभावोक्ति तथा रसोक्ति दोनों को इसके क्षेत्र से पृथक् रखा है।वक्रोक्ति को केवल अलङ्कार के रूप में ग्रहण करने वाले आचार्यों में मतभेद है–

किसी ने इसकी गणना शब्दालङ्कारों में की है तो किसी ने अर्थालङ्कारों में भामह ने वक्रोक्ति का सर्वालङ्कार रूपों में स्वीकार अवश्य किया है। किन्तु वक्रोक्ति की स्थापना उतने सुदृढ रूप मे नही की जितने सुदृढ रूप में कुन्तक ने की है। कुन्तक ने वक्रोक्ति को एक मात्र अलङ्कार कहकर समस्त काव्यसौनेरेय का अन्तर्भाव वक्रोक्ति में ही कर लिया है। आचार्य कुन्तक के अनुसार वक्तोक्ति का अभिप्राय है प्रसिद्ध अभिधान का अतिक्रमण करने वाली सहृदय आह्लादकारिणी वैदग्ध की शोभा से युक्त भणिति। प्रसिद्दि का अर्थ है शास्त्रादि तथा लोक व्यवहार में प्रयुक्त इसप्रकार वक्रोक्ति शास्त्रादि में उपनिबद्ध शब्दार्थसम्बन्ध तथा प्रचलित व्यवहार सरणी का अतिक्रमण करने वाली है। एतादृशी वक्रोक्ति का प्रयोग

**1.भिन्नं द्विधा स्वभावोक्ति वक्रोक्ति चेति वाङ्गमयं**[6]

**2.वक्रोक्तिश्च रसोक्तिश्च स्वभावोक्तिश्च वाङ्गमयं**[7]

**3.रूद्रट,मम्मट,वाग्भट,द्वितीय ,विश्वनाधथ तथा केशव मिश्र ने वक्रोक्ति को शब्दालङ्कार माना है।**

**4.वामन ,जयदेव , विद्याधर, विद्यानाथ, रूय्यक, तथा अप्पय दीक्षित ने अर्थालङ्कारों में वक्रेक्ति कि घणना की है।**

**5.वक्रोक्ति प्रसिद्ध अभिधान व्यतिरेकिणीविचित्रावाभिधा।कीदृशी वैदग्धभंगीभणिति वैदग्धं विदिग्धभव: कविकर्मकौशलं तस्य भङ्गीविच्छित्ति: तया भणिति।**

**6.क-वक्रो यो असौ शास्त्रादि प्रसिद्ध शब्दार्थोपनिबन्धव्यतरेकी ।**

**ख**- वक्रभावा प्रसिद्धप्रस्थानव्यतिरेकीवैचित्र्यं विदिग्धद्वारा हि सम्भव है। केवल शास्त्रज्ञ द्वारा नही इसीकारण कुन्तक ने वक्रोक्ति को वैदग्धभङ्गीभणिति कहा है। काव्य में यह वैदग्धभङ्गीभणिति कवि कर्म के आश्रित रहती है। वक्रोक्ति के लिए लोक और शास्त्र में प्रयुक्त शब्द अर्थ के उपनिबन्धन से भिन्न होना तथा कविकौशल पर आश्रित होना हि पर्याप्त नही है अपितु उसमें सहृदय के मन: प्रसादन की क्षमता होना अनिवार्य है। इस वक्क्ति के 6 प्रकार हैं-

1. **वर्णविन्यासवक्रता**
2. **पदपूर्वार्धवक्रता**
3. **दपदार्धवक्रता**
4. **वाक्यवक्रता**
5. **प्रकरणवक्रता**
6. **प्रबन्धवक्रता**

वक्रोक्ति के इन 6 भेदों में कुन्तक ने काव्यसौन्दर्य का अन्तर्भाव कर लिया है। यह वक्रोक्ति काव्य के सूक्ष्मतम अङ्ग वर्णविन्यास से लेकर स्थूलतम अङ्ग प्रबन्ध में भी प्राप्त होती है।

**वर्णविन्यासवक्रता**

वर्ण भाषा का स्वरूपधायक ही नही भावों के समर्थ वाहक भी है, इसीप्रकार महाकवि ने यह विशेषता मानी है,कि वह वर्णविन्यास की समस्त संभावनाओं को भावोत्कर्ष के लिए नियोजित कर दे।वर्णविन्यास प्रवीण कवि काव्य में सहज हि संगीतात्मकता उत्पन्न कर देता है। वर्णविन्यास के महत्त्व के कारण हि कुन्तक ने इसे वक्रोक्ति का सर्वप्रथम भेद माना है। उनके अनुसार सहृदयाह्लादकारी तथा साधारण व्यवहार से भिन्न वर्णों कि

संयोजना वर्णविन्यासवक्रता कहलाती है। कुन्तक कि वर्णविन्यास वक्रता का मुख्याधार है व्यञ्जनों कि आवृत्ति । यह आवृत्ति दो प्रकार कि हो सकती है। प्रथम जिसमें वर्णों कि आवृत्ति का स्थान नियत न हो तथा द्वितीय जिसमें वर्णों कि आवृत्ति का स्थान नियत हो । इसी आधार पर कुन्तक ने वर्णविन्यासवक्रता के दो भेद किए हैं। प्रथम को उन्होने अनुप्रास का द्वितीय को यमक का पर्याय बताया है।अनियत स्थानवृत्ति रूप वर्णविन्यासवक्रता तथा अभिज्ञानशाकुन्तलं में उसका प्रयोग- अनियतस्थानवृत्ति रूप वर्णविन्यासवक्रता[३] प्रकार कि होती है।

1.प्रथम प्रकार एक दो अथवा अनेक वर्णों कि स्वल्पानन्तर से आवृत्ति इसके भी तीन भेद होते हैं।एक वर्ण कि अनेकधा आवृत्ति-

**एको द्वौ बहवो वर्णाः बद्धमाना पुनः पुनः ।**

**स्वल्पानन्तरस्त्रिधा सोक्ता वर्णविन्यासवक्रता।।**[8]

येयं वर्णविन्यासवक्रता नाम वाचकाऽलङ्कृतिः स्थाननियमाभावात् सकलवाक्यस्य विषयत्वेन समाम्नाता सैव प्रकारान्तरविशिष्टा नियतस्थआन तयोपनिबद्धमाना किमपि वैचित्र्यान्तरमानबाधजातिव्याह। (वक्रोक्तिजीवितम् पेज-188.)

2.एतददेववर्णविन्यासवक्रतं चिरन्तनेष्वनुप्रासेति प्रसिद्धं। यमकनाम कोऽप्यस्याः प्रकारः परिदृश्यते । वर्णानां विन्यासो वर्णविन्यासः अक्षराणां विशिष्टन्यसनं तस्य वक्रत्वं वक्रभावः प्रसिद्धप्रस्थानातिरेकिणा वैचित्र्योपनिबन्धा सन्निवेशः विशेषविहित तस्य तद्विदाह्लादकारिणी शब्दशोभातिशयः ।

3.वर्णशब्दोऽत्र व्यञ्जनपर्याय तथा प्रसिद्धत्वात् अभिज्ञानशाकुन्तले-

**क-** **स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु,**

**क्लिष्टं नु तावत्फलमेव पुण्यम्।**

**असन्निवृत्यै तदतीतमेते,**

**मनोरथा नाम तटप्रपातः।।**[9]

यहां प्रथम चरण में म और न कि तृतीय चरण में भी म और न कि आवृत्ति है।

**ख-** अनेक वर्णों कि अनेकधा आवृत्ति

**तव कुसुमशरत्वं शीतरश्मित्वमिन्द्रो-**

**र्द्वयमिदमयथार्थं दृश्यते मद्विधेषु।**

**विसृजति हिमगर्भैरग्निमिन्दुर्मयूखै-**

**स्त्वमपि कुसुमबाणान् वज्रसारी करोषि।।**[10]

प्रथ चरण में त, स और र तथा द्वितीय चरण में द, य और  म वर्णों कि अनेकधा आवृत्ति है।

**द्वितीयप्रकार –** इसके भी दो भेद है।

क- अपने वर्ण के अन्तिम वर्ण से युक्त अन्तिम स्पर्श वर्ण कि आवृत्ति -

**शक्यमरविन्दसुरभिः कणवाही मालिनीतरङ्गाणानाम्। अङ्गैरनङ्गतप्तैरविरलमालिनिङ्गिंतु पवनः ।।**[11]

यहां अपने वर्ण कि अन्तिम वर्ण ङ से युक्त स्पर्श वर्ण ग कि आवृत्ति है। अन्य द्रष्टव्य स्थल अभिज्ञानशाकुन्तलं-

**भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः,**

**नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।**

**अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः,**

**स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।**[12]

**कान्तियोगिनः स्पर्शः द्विरुक्तास्तलनादयः।**

**शिष्टा स च रादिसंयुक्तः प्रस्तुतो चित्यशोभिनः।।**[13]

ख-द्विरोक्त त, ल, न आदि की आवृत्ति

**मय्येव विस्मरणदारुणचित्तवृत्तौ,**

**वृत्तं रहः प्रणयमप्रतिपद्यमाने ।**

**भेदात् भ्रूवोः कुटिलयोरतिलोहिताक्ष्या,**

**भग्नं शरासनमिवातिरुषास्मरस्य।।**[14]

यहाँ द्विरुक्तता में त कि आवृत्ति है।

**ग-** वर्गान्तयुक्त स्पर्श वर्णों तथा तकार, लकार, नकार आदि से भिन्न शेष व्यञ्जन य, र, ल, व, श, स, ष, ह कि रेफादि से युक्त संयुक्त रूप में आवृत्ति है।

अनियत स्थान वृत्ति रूप वर्णविन्यास वक्रता के उपयुक्त दोनों भेदों कि अनिवार्यता है, अनियत दूर आवृत्ति वस्तुतः वर्णों कि आवृत्ति समीपस्थ रहने पर हि चमत्कारिणी होती है। कुन्तक के पूर्व दण्डी और रुद्रट ने भी अदूर आवृत्ति को ही अनुप्रास में स्वीकार किया है।

**तृतीय प्रकार-** प्रथम द्वितीय प्रकारों में स्वल्पानन्तर से वर्णों कि आवृत्ति का विधन किया गया है कितु कहीं कहीं पर व्यवधान न होने पर भी स्वरों कि विषमता होने पर समान वर्णों के ग्रथित होने से रचना में मनोहारता आ जाती है। यही कुन्तक कि अनियतस्थान वृत्तिरूपवर्णविन्यासवक्रता का तृतीय प्रकार है। उदा–

**मय्येव विस्मरणदारुणचित्तवृत्तौ,**

**वृत्तं रहः प्रणयमप्रतिपद्यमाने ।**

**भेदात् भ्रूवोः कुटिलयोरतिलोहिताक्ष्या,**

**भग्नं शरासनमिवातिरुषा स्मरस्य॥**[15]

**क्वचिद् व्यवधानेऽपि निबन्धना ।**

**स स्वरणां सारूप्यात् परां पुष्णाति वक्रतां॥**[16]

एक दो अथवा अनेक वर्णों कि उसी क्रम में आवृत्ति को इसी तृतीय वर्णविन्यासवक्रता के अन्तर्गत माना है, अत एव कहा जा सकता है कि (व्यधान रहित अथवा व्यवधान सहित एक दो अथवा अनेक वर्णों कि उसी क्रम में आवृत्ति तृतीय प्रकार कि अनियत स्थान वृत्तिरूप वर्ण विन्यासवक्रता है)।

सव्यवधान और अव्यवधाना इन दोनों भेदों से युक्त इस वर्णविन्यासवक्रता से सुशोभित वाक्यरचना उसी प्रकार सहृदयाह्लादकारिणी होती है, जिसप्रकार मोतियों के हार के मध्य अनुस्यूत मणि निर्मित पदक रमणीय होते हैं।

**क-** **ईषदीषच्चुम्बितानि भ्रमरैः सुकुमारकेसरशिखानि।**

**अवतंसयन्ति दयमानाः प्रमदाः शिरीषकुसुमानि॥**[17]

यहां च्चु में एक वर्ण च कि व्यवधानरहित आवृत्ति है।

**ख-** व्यवधान सहित एक दो अथवा अनेक वर्णों कि उसी क्रम में आवृत्ति –

**कृतं न कर्णार्पितबन्धनं सखे,**

**शिरीषनमागण्डविलम्बिकेसरम्।**

**न वा शरच्चन्द्रमरीचिकोमलं,**

**मृणालसूक्तं रचितं स्तनान्तरे॥**[18]

यहाँ व्यवधानसहित एक वर्ण न कि आवृत्ति है। अन्यत स्थानवृत्ति रूप वर्णविन्यासवक्रता के प्रथम द्वितीय प्रकार से तृतीय प्रकार का केवल यही भेद है कि तृतीय प्रकार में वर्णों कि आवृत्ति उसी क्रम में होती है,जब कि प्रथम और द्वितीय वर्णों कि आवृत्ति उसी क्रम से नही होती है।

नियतस्थानवृत्तिरूपवर्णविन्यासवक्रता तथा अभिज्ञानशाकुन्तलं में उसका प्रयोग- इस वर्णविन्यासवक्रता में कुन्तक ने यमक अलङ्कार को समाहित कर लिया है। उन्होने कहा है कि इस वर्णविन्यासवक्रता को भिन्न अर्थ वाले समान वर्णों से युक्त प्रसाद गुण से समन्वित श्रुति रमणीय औचित्यपूर्ण तथा आदि मध्य और अन्त इत्यादि नियत स्थानों पर सुशोभित  होने वाला यमक नाम का अपूर्व भेद दृष्टिगोचर होता है। कुन्तक ने वर्णविन्यासवक्रता के रूप में यमक को स्वीकार किया है। पूर्वाचार्यों के समान यमक के भेद प्रभेदों के झाड झंखार में फसना नही चाहते थे। वर्णविन्यासवक्रता से भिन्न किसी अन्य शोभा का अभाव होने के कारण यमक का अधिक विस्तार नही किया गया ह। उदा-

**प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा,**

**निषेवते श्रान्तमना विविक्तम्।**

**यूथानि संचार्य रविप्रतप्तः,**

**शीतं दिवा स्थानमिव द्विपेन्द्रः॥**[19]

यहाँ प्रजा प्रजा भिन्न अर्थ वाले समान वर्णों से युक्त हैं, अतः यहाँ नियतस्थानवृत्तिरूपवर्णविन्यासवक्रता है।

**सन्दर्भग्रन्थसूची-**


1.मल्लिनाथ( अभिज्ञानशाकुन्तलं भूमिका)
2.वक्रोक्तिजीवितम्-1.10
3.काव्यालङ्कार रूद्रट4.8
4.काव्यमीमांसा-7.7
5.काव्यादर्श-2.363
6.सरस्वतीकण्ठाभरणम्-5.8
7.वक्रोक्तिजीवितम्-2.1
8.अभिज्ञानशाकुन्तलम्-6.10
9.अभिज्ञानशाकुन्तलम्-3.3
10.अभिज्ञानशाकुन्तलम्-3.4
11.अभिज्ञानशाकुन्तलम्-5.12
12.वक्रोक्तिजीवितम्-2.2
13.अभिज्ञानशाकुन्तलम्-5.23
14.अभिज्ञानशाकुन्तलम्-5.23
15.काव्यादर्श-1.25
16.वक्रोक्तिजीवितम्-2.3
17.अभिज्ञानशाकुन्तलम्-1.4
18.अभिज्ञानशाकुन्तलम्-6.18

19.अभिज्ञानशाकुन्तलम्–5.5